अश्विन सांघी

कृष्ण कुंजी

बेस्ट सेलिंग रोज़ाबेल लाइन
और पुरस्कृत चाणक्य मंत्र
के लेखक द्वारा

अनुवादः
नवेद अकबर

वैस्टलैंड लिमिटेड

कृष्ण कुंजी

अश्विन सांघी का पहला उपन्यास, *द रोज़ाबेल लाइन*, 2007 में उनके छद्मनाम शॉन हेगिन्स से स्व-प्रकाशित था। बाद में उनके अपने नाम से 2008 में वैस्टलैंड द्वारा प्रकाशित हुआ और यह एक बैस्टसैलर बना और कई महीनों तक राष्ट्रीय बैस्टसैलर लिस्ट में रहा।

अश्विन सांघी का दूसरा उपन्यास, *चाणक्याज़ चैंट*, जोकि मौर्य इतिहास में जड़ें रखने वाला एक राजनीतिक थ्रिलर है, अपने आरंभ के बाद कुछ ही सप्ताह में भारत की लगभग प्रत्येक बैस्टसैलर लिस्ट के शिखर पर पहुंच गया। इस उपन्यास ने आगे चलकर क्रॉसवर्ड-वोडाफ़ोन पॉपुलर चॉयस अवार्ड 2010 जीता, और फिल्म निर्माता यूटीवी ने इस पुस्तक के फिल्म अधिकार प्राप्त कर लिए।

अश्विन का तीसरा उपन्यास, *द कृष्णा की*, एक रोमांचक थ्रिलर है जो वैदिक युग और महाभारत के प्राचीन रहस्यों की खोज करता है।

अश्विन व्यवसाय से उद्यमी हैं लेकिन रोमांच विधा में ऐतिहासिक उपन्यास लिखना आपका जुनून और शौक है। सांघी ने कैथीड्रल एंड जॉन कॉनन स्कूल, मुंबई और सेंट जेवियर कॉलेज, मुंबई से शिक्षा प्राप्त की थी। आपने येल से स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की और क्रिएटिव राइटिंग में पीएच.डी कर रहे हैं। आप मुंबई में अपनी पत्नी अनुषिका और पुत्र रघुवीर के साथ रहते हैं।

ई-मेल या सोशल मीडिया के माध्यम से अश्विन से www.sanghi.in पर संपर्क किया जा सकता है।

नवेद अकबर अनुवाद से काफ़ी लंबे अरसे से जुड़े हुए हैं। आपने *पैराडाइज़* (खुशवंत सिंह), *माई डेज़ इन प्रिजन* (इफ़्तिख़ार गीलानी), *सी ऑफ़ पॉपीज़* (अमिताभ घोष) और *सेक्रेड गेम्स* (विक्रम चंद्रा) जैसी मशहूर किताबों का अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद किया है। आपने *चाणक्याज़ चैंट* का भी अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद किया हैं।

कृष्ण कुंजी

अश्विन सांघी

अनुवाद
नवेद अकबर

यात्रा बुक्स
Westland Ltd

अंतर्वस्तु

लेखक की टिप्पणी
चेतावनी
महाभारत के युद्ध में राज्यों का नक्शा
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21

22
23
24
25
26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46
47
48
49
50
51

52
53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80

81
82
83
84
85
86
87
88
89
90
91
92
93
94
95
96
97
98
99
100
101
102
103
104
105
106
107
108
संदर्भ एवं आभार

लेखक की टिप्पणी

मैं अपनी पत्नी अनुषिका और बेटे रघुवीर का आभारी हूं जिन्होंने किताब लिखने के दौरान अपने जीवन में मेरी अनुपस्थिति को बिना किसी शिकायत के सहन किया। वे मेरी प्रेरणा, मेरा जीवन और मेरी सांस हैं।

मैं अपने माता-पिता, महेंद्र और मंजू, का अनुग्रहीत हूं, जिन्होंने मेरे लेखन सहित मेरे सारे प्रयासों में मेरा समर्थन किया। मेरे भाई और बहन, वैभव और विधि, का भी शुक्रिया जिन्होंने काम पर और घर पर उस समय अधूरे कामों को पूरा किया जब मैं इस प्रोजेक्ट पर काम कर रहा था।

मेरी आंट, अपर्णा गुप्ता, मेरी चिरकालिक मित्र और मार्गदर्शक हैं, लेकिन मेरे काम की आलोचना करने से कभी नहीं हिचकिचाती हैं। मैं उनका आभारी हूं कि उन्होंने उस समय साउंडिंग-बोर्ड की भूमिका निभाई जब यह उपन्यास लेखन के चरण में था।

मैं अपनी संपादक प्रीता मैत्रा और प्रकाशक गौतम पद्मनाभन का आभारी हूं जिनके बिना इस उपन्यास सहित मेरा कोई भी उपन्यास अपनी पांडुलिपियों से बाहर ही न आ पाता। साथ ही, मैं वैस्टलैंड के पॉल विनय कुमार, रेणुका चटर्जी, अनुश्री बनर्जी और सतीश सुंदरम का भी शुक्रगुजार हूं जिन्होंने हमेशा तहेदिल से मेरा साथ दिया है।

गुंजन अहलावत और कुणाल कुंदू के नाम सुंदर कवर डिजाइन के लिए विशेष उल्लेख के योग्य हैं और साथ ही इस सबको संजोने के लिए विपिन विजय भी। इस उपन्यास के पृष्ठों के अंदर चित्रणों के लिए रूपेश तलसकर को मेरा शुक्रिया। मैं प्रमुख संस्कृत अनुवादों के लिए विश्वजीत सपन के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूं।

इस उपन्यास के केंद्रीय श्लोक का ऑडियो ट्रैक निर्मित करने के लिए अमेय नायक और कुशल गोपालका को ख़ासतौर से शुक्रिया। अंत में, वीडियो ट्रेलर बनाने में सहायता करने के लिए 'थिंक व्हाइ नॉट' टीम के हेमल मथीजा, शालिनी अय्यर और सौरभ शर्मा का विशेष रूप से धन्यवाद।

मैं मूल या उपगत कृतियों के विभिन्न लेखकों व रचयिताओं का आभारी हूं। इस कहानी के अंत में एक पृथक आभार खंड में विस्तारपूर्वक इनकी सूची प्रस्तुत की गई है।

यह मेरा सौभाग्य है कि मैं स्वर्गीय श्री राम प्रसाद गुप्ता का पोता और उनके भाई स्वर्गीय श्री राम गोपाल गुप्ता का भतीजपोता हूं। उनके आशीर्वाद कलम थामने वाली मेरी उंगलियों को प्रेरित करते हैं।

अंत में, मैं इस तथ्य से भलीभांति परिचित हूं कि जब मैं लिखने के लिए बैठता हूं, तो मस्तिष्क से सामग्री में ढलने वाले शब्द केवल मेरे माध्यम से आते हैं, मुझसे नहीं। मैं किस प्रकार वास्तविक लेखक--निर्गुण, निराकार और अनंत सर्वशक्तिमान--के प्रति आभार प्रकट करूं?

शायद यह पुस्तक इस प्रश्न का उत्तर दे सके।

चेतावनी

इस पुस्तक में कहानी के भीतर की बारीकियां समझाने के लिए अनेक चित्रों का प्रयोग किया गया है। समयपूर्व पुस्तक के अंत की ओर के पन्ने पलटने से आप अनजाने में ऐसे चित्र देख सकते हैं जो आपके लिए कहानी को बिगाड़ सकते हैं। इसलिए हम ऐसा करने का सुझाव नहीं देंगे।

स्पष्टीकरण

यह पुस्तक काल्पनिक है और इसे इसी रूप में पढ़ना चाहिए। इसकी ऐतिहासिक शुद्धता के बारे में स्पष्ट या अस्पष्ट रूप से कोई दावा नहीं किया जा रहा है। इस पुस्तक में प्रयुक्त सारे नाम, पात्र, स्थान और घटनाएं लेखक की कल्पना का नतीजा हैं। ऐतिहासिक, धार्मिक या पौराणिक पात्र; ऐतिहासिक या पुरातन घटनाएं; या स्थानों के नाम मात्र काल्पनिक हैं। पुस्तक के अंत में आभार व संदर्भ खंड में ऐतिहासिक, पौराणिक या धार्मिक सामग्री को आरोपित करने का पूरा प्रयास किया गया है। जीवित या मृत वास्तविक लोगों, अतीत की घटनाओं या ऐतिहासिक स्थानों से किसी भी प्रकार की समानता मात्र संयोगवश हो सकता है। चित्र व नक़्शे केवल कहानी को समझने के उद्देश्य से और शुद्धता के किसी दावे के बिना दिए गए हैं।

महाभारत के युद्ध में राज्यों का नक़्शा

वास्तव में कौन जानता है, और कौन शपथ लेकर कह सकता है,
कि सृष्टि की उत्पत्ति कैसे, कब या कहां हुई!
देवता भी सृष्टि के बाद आए थे,
वास्तव में कौन जानता है, कौन सच में कह सकता है
कब और कैसे सृष्टि आरंभ हुई थी?
क्या उसने इसे रचा था? या उसने नहीं रचा था?
केवल वह, वहां ऊपर, जानता है, संभवतः;
या संभवतः वह भी नहीं जानता।

--ऋग्वेद 10:129

1

मैं आरंभ से प्रारंभ करता हूं... अपने जन्म से भी पहले से। मेरे पूर्वजों में से एक थे राजा ययाति। अपनी पत्नी देवयानी, जो ऋषि शुक्राचार्य की पुत्री थीं, के प्रति निष्ठाहीन होने के लिए उन्हें ऋषि शुक्राचार्य ने शाप दे दिया था। शाप यह था कि ययाति समयपूर्व वृद्ध हो जाएंगे और इस प्रकार यौवन और पुरुषत्व के आनंद नहीं भोग सकेंगे। बाद में, शुक्राचार्य कुछ नर्म पड़े और उन्होंने शाप के प्रभाव को थोड़ा कम कर दियाः यदि ययाति के पुत्रों यदु और पुरु में से कोई भी इस शाप के प्रभाव को स्वीकार ले तो उन्हें क्षमा कर दिया जाएगा। ज्येष्ठ पुत्र यदु ने इंकार कर दिया लेकिन छोटे पुत्र पुरु ने इसे स्वयं पर लेना स्वीकार कर लिया। ययाति ने पुरस्कारस्वरूप यदु के स्थान पर पुरु को अपने बाद राजा बनने के लिए उत्तराधिकारी चुना। क्रुद्ध ययाति ने अपने बड़े बेटे के दंड को और भी बढ़ा दिया। "तुम या तुम्हारे वंशजों में से कोई भी कभी किसी सिंहासन पर नहीं बैठेगा!" उन्होंने क्रोधपूर्वक भविष्यवाणी की। अभागे यदु ने अपना घर छोड़ दिया और मथुरा में रहने लगे जहां उनका वंश अत्यंत फला-फूला। यदु के वंशज यादव थे, जिनमें से एक मैं भी हूं। तबसे यादव राजा-निर्माता तो रहे हैं, लेकिन कभी राजा नहीं बने। पुरु आगे चलकर हस्तिनापुर राज्य के पितृ बने--जहां से कौरवों और पांडवों के परिवार जन्मे।

अनिल वार्ष्णेय नहीं जानता था कि उसके पास जीने के लिए बारह मिनट से भी कम समय बचा है। राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में उसके साधारण से घर पर इस समय कूलर की घरघराहट के अलावा मौत जैसी ख़ामोशी पसरी हुई थी। वार्ष्णेय को ख़ामोशी पसंद थी। इससे उसे अपने सामने बिखरे हुए विचित्र अक्षरों और चिह्नों में डूबने का अवसर मिलता था।

भारत के सबसे युवा भाषाविज्ञानी और प्रतीकविज्ञानी का काम इस समय चिंतन ही था, जो सिंधु घाटी सभ्यता के प्राचीन चित्रप्रतीकों की व्याख्या करके अचानक प्रसिद्ध हो गया था। पंद्रह से अधिक भाषाएं धाराप्रवाह बोलने वाले वार्ष्णेय की दस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी थीं जिनमें भारतीय भाषाओं का सबसे ज़्यादा प्रयुक्त बहुभाषीय शब्दकोश भी शामिल था। प्राचीन लेखन प्रणाली के लिए वार्ष्णेय वही था, जो बिल गेट्स ऑपरेटिंग सिस्टम्स के लिए है।

उसके रहने की जगह जैसे प्रचलन के मुताबिक बेतरतीब थी और वहां रहने वाली उत्कृष्ट